

मीठी क्रांति: प्रधानमंत्री मोदी के विज़न पर आधारित मधुमक्खी पालन का भविष्य

प्रवीण गोला

महिला उद्यमिता, मधुमक्खी पालन, नई दिल्ली

प्रस्तावना

भारत सदियों से कृषि प्रधान देश रहा है, और आज जब देश आत्मनिर्भर भारत (Aatmanirbhar Bharat) की ओर बढ़ रहा है, तब कृषि क्षेत्र में विविधता लाना अनिवार्य हो गया है। परंपरागत खेती से आगे बढ़ते हुए अब ऐसे विकल्पों की आवश्यकता है जो कम लागत में अधिक लाभ दें, पर्यावरण हितैषी हों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती दें। इन्हीं

विकल्पों में से एक है – मधुमक्खी पालन (Beekeeping)।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी अपने लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात (Mann Ki Baat)' के एपिसोड नंबर 122 (मई 2025) में मधुमक्खी पालन का विशेष रूप से उल्लेख किया और इसे 'मीठी क्रांति (Sweet Revolution)' कहा। उन्होंने देशभर के किसानों, विशेष रूप से युवाओं और महिलाओं को मधुमक्खी पालन अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।



“मीठी क्रांति” का अर्थ और उद्देश्य

हरित क्रांति, श्वेत क्रांति और नीली क्रांति की तरह ही 'मीठी क्रांति' का उद्देश्य है –शहद उत्पादन को बढ़ावा देना, स्वदेशी शुद्ध शहद का व्यापारिक विकास, और मधुमक्खी पालन के माध्यम से किसानों की आय दोगुनी करना। शहद उत्पादन एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें देश की बड़ी संभावनाएँ छिपी हैं, लेकिन जागरूकता और प्रशिक्षण की कमी के कारण यह पूरी तरह से विकसित नहीं हो सका। मीठी क्रांति इसी अंतर को भरने का प्रयास है।

प्रधानमंत्री मोदी और मन की बात में मधुमक्खी पालन का जिक्र

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा: "शहद उत्पादन हमारे देश के किसानों की आमदनी बढ़ाने का एक बड़ा माध्यम बन सकता है। आज देशभर में हज़ारों किसान और महिलाएँ मधुमक्खी पालन कर रहे हैं और इसमें बड़ी सफलताएँ प्राप्त कर रहे हैं।"

"मीठी क्रांति" को हम जितना बढ़ाएंगे, उतना ही देश को मधुमक्खियों से मिलने वाले लाभ और किसानों को आर्थिक समृद्धि मिलेगी।"

मन की बात में मोदी जी ने कई युवा उद्यमियों और महिला किसानों का उदाहरण देते हुए बताया कि किस प्रकार सीमित संसाधनों में भी मधुमक्खी पालन से लाखों की कमाई की जा सकती है।

भारत में मधुमक्खी पालन की वर्तमान स्थिति

- भारत विश्व के शीर्ष 10 शहद उत्पादक देशों में शामिल है।
- राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड (National Bee Board - NBB) के अनुसार, भारत में हर साल लगभग 1.2 लाख मीट्रिक टन शहद का उत्पादन होता है।

- भारत में शहद का 70% हिस्सा निर्यात किया जाता है।
- मधुमक्खियों द्वारा परागण (Pollination) से 30% तक कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है।



सरकारी योजनाएं और सहायता

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सरकार ने मधुमक्खी पालकों के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं:

1. **राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन और शहद मिशन (NBHM)** –500 करोड़ रुपये का फंड, प्रशिक्षण, उपकरण और विपणन सहयोग के लिए।
2. **प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना** में मधुमक्खी पालन को शामिल करना।
3. **PM-FME (Formalization of Micro Food Processing Enterprises)** योजना के तहत शहद प्रोसेसिंग यूनिट्स को सहायता।
4. **KVIC (Khadi & Village Industries Commission)** द्वारा मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण और मुफ्त बॉक्स वितरण।

महिला उद्यमिता और मधुमक्खी पालन

आज भारत में हजारों महिलाएं मधुमक्खी पालन को एक व्यवसाय के रूप में अपना चुकी हैं। एक प्रेरणादायक उदाहरण है: "Honey वाली" – एक महिला उद्यमी की कहानी

दिल्ली की एक महिला मधुमक्खी पालक ने KVIC से प्रशिक्षण लेकर अपने छोटे से फार्म से शुद्ध कश्मीरी बबूल (*Acacia*) शहद का उत्पादन शुरू किया। उन्होंने अपने ब्रांड का नाम "Honey वाली" रखा और अब वे सोशल मीडिया, मेलों, और ऑर्गेनिक प्रदर्शनियों के माध्यम से अपने शहद की बिक्री कर रही हैं।

जहां पहले वे केवल किसान थीं, वहीं अब वे एक सफल उद्यमी (entrepreneur) बन चुकी हैं – जो आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार कर रही हैं। उनकी प्रेरणा बनी 'मीठी क्रांति' और प्रधानमंत्री का आह्वान।



मधुमक्खी पालन के लाभ

- कम लागत में अधिक लाभ

- पर्यावरण हितैषी व्यवसाय
- फसल उत्पादन में वृद्धि
- स्वास्थ्यवर्धक उत्पाद: शहद, रॉयल जेली, बी वैक्स आदि
- ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर



मधुमक्खियों का पर्यावरणीय महत्व

मधुमक्खियाँ परागण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिससे न केवल फसलें बढ़ती हैं बल्कि जैव विविधता भी बनी रहती है। यदि मधुमक्खियाँ समाप्त हो जाएँ, तो मानव सभ्यता के अस्तित्व पर भी संकट आ सकता है।

चुनौतियाँ और समाधान

चुनौतियाँ	समाधान
जलवायु परिवर्तन	मधुमक्खी बॉक्स का सही स्थान चयन और छायादार वातावरण
कीटनाशकों का प्रयोग	ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देना
प्रशिक्षण की कमी	सरकार द्वारा अधिक प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना
विपणन की समस्या	ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, एफपीओ (FPO) और कोऑपरेटिव मॉडल

भविष्य की संभावनाएँ

- भारत 'शहद निर्यात हब' बन सकता है यदि ब्रांडिंग, गुणवत्ता और प्रशिक्षण पर ध्यान दिया जाए।

- युवा उद्यमियों को आकर्षित करने के लिए मधुमक्खी पालन को स्टार्टअप मॉडल में जोड़ा जा सकता है।
- 'वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट' (ODOP) योजना में शहद को शामिल कर स्थानीय ब्रांड विकसित किए जा सकते हैं।



निष्कर्ष

‘मीठी क्रांति’ सिर्फ एक नाम नहीं, बल्कि एक संकल्प है – स्वदेशी उत्पाद को बढ़ावा देने का, किसानों की आमदनी बढ़ाने का, और पर्यावरण को सुरक्षित रखने का। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने

जो सपना देखा है, वह तभी साकार होगा जब हम सब मिलकर मधुमक्खी पालन को एक जन आंदोलन बना दें।

आइए, मधुमक्खियों को बचाएं, शहद को अपनाएं और मीठी क्रांति को जन-जन तक पहुँचाएं।

